B.A. Part III
Paper - V
Date 19.5.2020
Dr. Savitri Singh
Associate Professor
R.M.C. SASARAM

अग्नि देवता के स्वरूप का वर्णन (ऋक्सूक्तनिधि के आधार पर) शेष भाग

अपने गृह में (यज्ञशाला में) निरन्तर प्रज्वलित रहना अग्नि देवता के प्रमुख कार्य हैं। अग्नि से प्रार्थना की जाती है कि वे हमारे लिए उसी प्रकार सुगम-सुलभ बने रहें जिस प्रकार पुत्र के लिए पिता सुलभ रहता है। हमारे कल्याण-कार्य के लिए अग्नि सदा निकट रहें।

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।
सचस्वा नः स्वस्तये ॥ ९ ॥

अग्निदेव अन्धकार के विनाशक, यज्ञ के प्रमुख सहायक एवं समस्त अनिष्ट तत्वों के विध्वंसक हैं। वनों पर आक्रमण करते हुए वे नापित के समान पृथ्वी को स्वच्छ करते हैं। उस समय उनका पथ अन्धकार-पूर्ण होता है, धूम ऊपर उठता है (धूमकेतुः)। अपने स्तोता को वे गार्हस्थ्य के आनन्द, सन्तान तथा अभ्युदय से परिपूर्ण कर देते हैं। दो अरुण अश्व उनके उज्ज्वल रथ को खींचते हैं। काष्ठ और घृत अग्नि के खाद्य पदार्थ हैं। घृत एवं सोम इनके पेय हैं। दिन में तीन बार भोजन करते हैं। वे देवताओं के मुख हैं। यज्ञ से ही विशेष सम्बन्ध के कारण उन्हें घृतपृष्ठ, शोचिष्केश, रक्तश्मश्रु, तीक्ष्णदंष्ट्र और रुक्मदन्त कहा गया है। ज्वालाएँ उनकी जिह्वाएँ हैं।

अग्नि को 'जातवेदस' सभी कुछ जानने वाला कहा गया है। इसी प्रकार उन्हें 'वैश्वानर' सभी मनुष्यों से सम्बद्ध भी कहा गया है।

— x —

Scanned by CamScanner

इस प्रकार अग्नि के स्थूल और सूक्ष्म रूपों की मनोरम कल्पना ऋग्वेद में मिलती है। ऐतरेय ब्राह्मण अग्नि के दो प्रकारों तिरोहित अग्नि और पुरोहित अग्नि का उल्लेख करता है। 'तिरोहित' शब्द अग्नि के अव्यक्त, गूढ़ तथा सूक्ष्म रूप का परिचायक है। और पुरोहित अग्नि व्यक्त, पार्थिव अग्नि का प्रतिपादक है। 'अग्निमीडे पुरोहितम्' मन्त्र में पुरोहित अर्थात् अभिव्यक्त - पार्थिव अग्नि की सत्ता का निर्देश स्पष्टतः किया गया है।

— x — x —

S. Singh

Date 19.05.2020

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. ऋक्सूक्तनिकर : उमाशंकर शर्मा ऋषि
2. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति : वाचस्पति गैरोला
3. वैदिक साहित्य और संस्कृति : आचार्य बलदेव उपाध्याय

Scanned by CamScanner